भविष्य के समाचार

[१९८० से २००१ तक]

★

त्रिकालदर्शियों के ९९ प्रतिशत सत्य कथन। अनदेखे, अज्ञात भविष्य को देखिए। कब कहाँ और कैसे घटित होते हैं :—

(१) विश्व युद्ध
(२) दुर्भिक्ष
(३) ग्रह मानव का आगमन.
(४) अवतार
(५) रामराज्य
(६) नई सृष्टि

सन् [illegible]

सम्पादक—

डा० अशोक 'क्रान्तिकारी'

★

* प्रकाशन *

प्रतिभा प्रकाशन—

बी० ३७/१८८ बिरदोपुर

वाराणसी

९-१-१९८० ई०

मुद्रक—

लोकबन्धु प्रेस,

के. १७/६ 'खुण्टे प्रासाद'

वाराणसी। फोन : ६३३२५

समर्पण

इस जगत के दोनों ही गोलार्द्धों को।

मेरी दुनियाँ के छोटे गोलार्द्ध में अपने मित्रगण हैं,

बन्धु व परिवार, गुरुजन व हितैषीगण हैं,

दूसरे बृहतर गोलार्द्धं में दुनियाँ भर के लोग हैं,

अनजाने हैं, अपरचित हैं, आत्मीय न सही मेरे आत्मीक

तो हैं । यह उन्हें समर्पित है ।

प्राक्कथन

भविष्य सम्बन्धित हमारी अभिरुचि स्वाभाविक है। विगत इतिहास में हमारी अभिरुचि हो, कोई जरूरी नहीं। वर्तमान हमारी आखों के सामने है। अत: उसमें हमारी अभिरुचि स्वभावतः नगण्य होती है। परन्तु ऐसे कम लोग होंगे; जो भविष्य में दिलचस्पी न लें। कहीं भी कोई चर्चा चल रही हो। आप वहाँ पहुँचिए। उस सम्भाषण में इस पुस्तक की दो एक बातों की फुलझड़ी छोड़ दीजिए। फिर देखिए क्या होता है। सभी लोगों की आँखें आप पर गड़ जाएँगी। सभी का ध्यान आप पर होगा। सभी के कान आपकी बातें सुनेंगे।

राजनीति शास्त्र के बड़े से बड़े ज्ञाता नहीं जानते कि आज की घटनाओं का अन्त कहाँ होगा। छोटी मोटी राजनैतिक वारदातें कैसे मोड़ लेंगी। बड़े से बड़े वैज्ञानिक भी असफल सिद्ध होते हैं। वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की थी कि भारत जैसे राष्ट्र सन् १९७९ में भूखों विनष्ट हो जायेंगे। जब कि सच्चाई यह है कि भारत की बराबरी भविष्य में रूस अमेरिका और चीनादि देश भी नहीं कर सकेंगे।

आखिर मेरे कथनों का आधार क्या है? वह आधार है त्रिकाल-दर्शियों का भविष्य-दर्शन। सैकड़ों वर्ष पूर्व नास्त्रेदाम ने भविष्य की दुनियां देखी और एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर दिया था। तारीख दर तारीख घटनाएं घटीं। इतिहास आगे बढ़ा। समय की कसौटी पर नास्त्रेदाम हमेशा खरें उतरे। यहाँ तक कि युद्ध में मृतकों कीसंख्या में भी अन्तर नहीं आया।

दि इयर २००० के लेखक द्वय कैन एण्ड वीनर ने यह स्वीकार किया है कि सच्ची और प्रामाणिक वैज्ञानिक भविष्य वाणियाँ असम्भव हैं। कोई भी

वैज्ञानिक विश्व युद्धों के विषय में सन १९०० में तथा १९३३ में नहीं कह सकता था। भविष्य सम्बन्धित विज्ञान को फ्यूचरोलॉजी कहते हैं। इसका ज्ञान दो प्रकार से किया जा सकता है। (१) वैज्ञानिक पद्धति से। (२) छठीं ज्ञानेन्द्रिय से। मैं आपको वैज्ञानिकों की भविष्य वाणियों का लाभ यहाँ नहीं दे सका हूं। यहाँ, जिन त्रिकालदर्शियों की मैंने कृतियों का लाभ उठाया है उनका उल्लेख आभार सहित कर रहा हूं—फ्लोरेन्स की कृत्तियां—गोल्डेन लाइट आफ ए न्यू एरा 'फाल अफ द सेन्सेशनल कल्चर,' कसीदा, बुखारा के पेशिगो श्री वली साहब, श्रीमती ह्यूजेज, जीन एडन, श्रीमती डिक्सन, पीटर हरकोस, प्रो० हरार, डा०जूलवर्न, नस्त्रेदाम, जेन सेवेज, फादरपियो, माल्वा डी, श्री निर्वाणानन्द जी, श्री मूर्तिजी तथा चीरो आदि। इसके अतिरिक्त आगामी युद्ध पर भी कुछ पुस्तकें देखने को मिलीं। कुछ वैज्ञानिक भविष्य-वाणियों पर भी। एल्विन टाफलर की 'फ्यूचर शॉक'। सर जॉन हैकेट द्वारा रचित 'दि थर्ड वर्ल्ड वार'।

भविष्यवक्ताओं के विषय में मैं कुछ अधिक परिचय की गुंजाइश नहीं देख रहा हूं। इसका मुझे खेद है। ये सभी भविष्यवक्ता अपने समय की मानी-जानी हस्तियाँ रहे हैं। बड़े नेता जैसे चर्चिल, रुजवेल्ट आदि अपनी आगामी घड़ियों की पूछ ताछ करने जीन डिक्सन के यहां पहुंचते रहे। फ्लोरेन्स के यहां पत्रकारों की भीड़ लगी रहती थी। चीरो से उस समय के पुलिस अधिकारी जटिल गुत्थियों को सुलझवाया करते थे। यह एक प्रसन्नता का विषय है कि आपके हाथों एक दुर्लभ विषय पर लिखी गई पुस्तक सुलभता से. उपलब्ध हो रही है।

प्राकृतिक प्रकोप

इस शताब्दि के अन्तिम दशकों में प्रकृति अपना उग्रतमरुप प्रगट करेगी। वस्तुतः इस कथन की सत्यता देख कर ही इस पुस्तक के प्रकाशन की प्रेरणा मिली और इसकी आवश्यकता महसूस की गई।

सदियों पूर्व घोषित बातें १९७९ में पुनः सत्य दृष्टि गोचर हुई। त्रिकाल-दर्शियों ने हमारे इस युग तथा आगामी युगों का दर्शन यथावत किया था प्रकृति का कुपित रुप हमें सन्१९८० के आगमन के पूर्व ही दिखाई पड़नेलगा।

इस पुस्तक की सामग्रियाँ मेरे वर्षों के संकलन के परिणाम हैं। गुजरात का मोरवी नगर भयंकर बाढ़ में वह गया। २५००० से भी ऊपर लोग मरे। आन्ध्र में समुद्री तूफान आया। और इस प्रकार त्रिकालदर्शियों के कथन शत-प्रतिशत सत्य दिखाई पड़ने लगे। उनका कथन है कि प्राकृतिक प्रकोप का उग्रतम रुप इस शताब्दि के अन्तिम दो दशकों में देखने को मिलेंगे। न तो ऐसी भयानकता देखी गई और न तो देखने को मिलेगी जितनी इस युग में घटित्त होगी। पनामा नगर(अमेरिका) तथा जापान का अधिकांश भाग प्रबल भूकम्प के फलस्वरुप समुद्र की गोद में समा जाँएगे। जल की जगह थल। स्थल के स्थान पर जल दिखाई देगा।

१० अप्रैल १९७९ को, दैनिक 'अमृत प्रभात' की छपी खबर यहां मैं उद्घृत करना चाहूँगा। यामल तंत्र के अनुसार भी इस अवधि में विश्व की बहुत बड़ी जन संख्या के विनष्ट होने की सम्भावना व्यक्त है।

सन् १९८२ के जून जुलाई के दिनों अमरीका, चीन, जापान, ईरान, तुर्की फिलीपाइन, ब्रिटेन, स्पेन, स्विट्जरलैण्ड, कनाडा, रूमानिया, अफ्रिका, रूस, जर्मनी, तथा श्रीं लंका के पूर्वी तटीय प्रदेश, नेपाल, तिब्बत, भूटान, पाकिस्तान और भारत में ऐसे प्राकृतिक प्रकोप बहुत बड़ी संख्या में होंगे।

जौन एडन जर्मनी के एक ख्याति प्राप्त त्रिकाल दर्शी हैं। ध्यान की गहराइयों के क्षण उन्होंने जून जूलाई सन् १९८२ का बड़ा ही भयानक दृश्य देखा। एक्सप्रेस रिव्यू के जनवरी ७८ अंक में उनके अनुभवों का प्रकाशनभी आया। ये अनुभव कड़वे हैं। जिज्ञासुओं को उन्होने एक बार यह भी कहा इस सम्बन्ध में मुझसे कुछ न पूछा जाय तो ही अच्छा है। इन दिनों प्रकृति के अन्तराल में मैं एक भयानक दृश्य देख रहा हूँ। प्रकृति उग्रतम रूप में होगी। ध्वंश के सर्वत्र दृश्य होगें। फरवरी और अगस्त के मध्य सन ८२ में प्रकृति का रौद्र रूप, मानव के पापमय जीवन के फलस्वरूप दिखाई देगा। भयंकर भूकम्प झंझावात, तूफान और समुद्रीय हलचल आएगे। इन्हीं दिनो विश्व युद्ध भी आरम्भ होगा। मानव जीवन दोहरी मार से त्रस्त होगा।

मैं अपने पाठको को इसका वैज्ञानिक, भौगोलिक अथवा एस्ट्रानामिकल कारण बताना चाहूँगा। विद्वानो के मतानुसार सन १९८२ में बुद्ध, शुक्र मंगल वृहस्पति, शनि, यूरेसनस, वरुण तथा प्लूटो के एक पंक्तिमें आ जाने और पृथ्वी को सूर्य के विपरीत दिशा में स्थिति के कारण ये उत्पात उत्पन्न होंगे। जान ग्रिविन ने भी इस कथन की पुष्टि की है।

प्रकृति को मैंने इतना क्रुद्ध कभी नहीं देखा जितना वह २०वीं शताब्दि में देखी जायगी। जल के स्थान पर पृथ्वी और पृथ्वी के स्थान पर जल हो जाएगा। चारो ओर प्रलय जैसी स्थिति बन जाएगी।

(नास्त्रेंदाम)

चीरो ने भी कहा है कि १० वर्षों तक प्रकृति का विकराल रूप देखने को मिलेगा। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, ज्वालामुखी के विस्फोट आदि होंगे और समुद्र से नये-नये टापू निकल आयेंगे।

"कोई नया टापू समुद्र से बाहर निकल आएगा जिसपर एक शक्ति-शाली राज्य का अधिकार होगा। इस टापू से इतनी अधिक सम्पत्ति प्राप्त होगी जितनी पूरी धरती पर भी न हो"।

(डा० जूलवर्न)

एक भयंकर भूकम्प से जापान के प्रलय की भी भविष्यवाणीं की गई है। १९८० के समय यह भूकम्प समस्त संसार को प्रभावित करेगा। वायु दुर्घटनाएँ इतनी अधिक होंगी कि लोग यात्रा करने में डरेंगे।

(जेन सवेज)

तृतीय विश्व-युद्ध

गंगोत्री के प्रसिद्ध योगी श्री निर्वाणानन्दजी ने विश्वयुद्ध का समय और दिनांक तक घोषित कर दिया है।

इस विश्व युद्ध का प्रारम्भ प्रातः ५-३०पर १८ सितम्बर सन १९८२ को होगा। श्री एण्डर्सन (अमेरिकी त्रिकालदर्शी) ने इसके श्रीगणेश का एक अच्छा विवरण प्रस्तुत किया है।

चीन सन १९८०-८१ तक अमेरिकाके दो महानगरों पर बम वर्षा करेगा ओर उन नगरों का विनाश कर डालेगा। परस्पर विरोधी दीखने वाले रूस एवं अमेरिका मित्रराष्ट्र बनेंगे। अमेरिका चीन से त्रस्त होकर रूस को सहायता के लिए मैत्री का हाथ आगे बढ़ायेगा। मेरा अनुमान है कि युद्ध के आरम्भ में न्यूयार्क एवं वाशिंगटन क्षतिग्रस्त होंगे। युद्ध के मध्य मास्को शहर भी आधा के लगभग भष्म हो जाएगा।

'विश्वयुद्ध का कारण चीन होगा। इस बात पर सभी एक मत हैं। श्री अरविंद ने भी चीन के भारत पर आक्रमण की भविष्यवाणी की थी। और वह सत्य घटित हुई।

प्रोफेसर हरार की भविष्यवाणियाँ ९९% सत्य होती आई हैं। उनके कथन का उद्धरण प्रस्तुत है :—

सन् १९७९ में अरब और इजराइल के बीच भयंकर युद्ध होगा। धर्म के नाम पर जेहाद। इस्लामी राष्ट्र एक होकर इजराइल का विरोध करेंगे।

रूस अरबों का मित्र बनेगा परन्तु धीरे-धीरे तटस्थ होजायेगा। इजराइल क अमरीका सहायता प्राप्त होगी और अरबों को लोहे के चने चबाने पड़ेंगे। अरबों को अत्यधिक क्षति पहुंचेगी मुसल्मानों क ा का इस युद्ध ह्रास होगा।

युद्ध की अवधि में तुर्की सीरिया, लेबनान आदि में भयंकर भूकम्प आएंगे तेल आदि के खानों पर बुरा असर पड़ेगा और आर्थिक दृष्टि से ये राष्ट्र कमजोर पड़ेंगे। सन् १९८१ तक भारत से चीन की मैत्री निश्चित है।

"चीन अमेरिका और रूस आदि पच्छिमी राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ेगा। एशिया के अन्य राष्ट्र चीन का साथ देंगे। इस अगले विश्व युद्ध में चीन जर्म्सबम तथा

विषैली गैसों का प्रयोग करेगा। इसका प्रभाव समस्त संसार पर पड़ेगा। पादरी पियो महोदय इटली के निवासी हैं। उनकी भविष्यवाणी है कि इसके दुष्परिणाम - स्वरुप लाखों व्यक्ति अन्धे हो जायेंगे, लाखो अपाहिज और ९५·/. रोग ग्रस्त। सन् १९९८ तक प्रलय की सी स्थिति होगी।

इस युद्ध में चीन बुरी तरह वर्बाद हो जाएगा। इसकी जनसंख्या आज की संख्या की १/४ रह जाएगी। इस युद्ध मे स्त्रियाँ भी भाग लेंगीं। विश्व में भारत का सम्मान बढ़ेगा। युद्ध के वाद संयुक्त राष्ट्र संघ समाप्त हो जायेगा। विश्व युद्ध का भारत वर्ष निर्णायिक होगा। एक नयी संस्था भारत में संयुक्त राष्ट्रसंघ के समान वनेगी। यह तीसरा विश्वयुद्ध सन १९८८ तक समाप्त होगा माल्वा डी ने भी कहा है कि १९८० से १९८८ तक प्राकृतिक प्रकोप की अधिकता रहेगी। विश्व युद्ध में शान्ति १९९९ तक होगी विश्वयुद्ध की समाप्ति का भी समय यही होगा।

इस युद्ध की समाप्ति आदि के समय मे जो विभिन्नता दिखाई देती है उसका कारण उग्र रुप की लड़ाई आदि है। सन् १९८४ से ८६-८८ यह युद्ध अपने उग्रतम रुप में रहेगा थोड़े बहुत रुप में इसकी अवधि सन् १९८२ से १९९२ तक होगी। विश्व युद्ध का यही सत्य है जिससे आज के पत्रकार भी अनभिज्ञ हैं। जान हैकेटकी काल्पनिक पुस्तक भी इसे नजरअन्दाज किए हुए है।

पतनोन्मुख मानव जीवन

विज्ञान के विकास और सभ्यता के होते हुए भी मानव अपना विवेक खो कर नैतिक गुणों से हीन होगा। वह मात्र बुद्धि के विकास पर बल देगा और अन्यान्य गुणों के अभाव में इसका अन्जाम विश्व युद्ध की विभीषिका में देखेगा।

सम्पूर्ण विश्व में लूट-खसोट, मारपीट, हत्यायें चोरी-डकैतियों का बोल-बाला रहेगा। राजनैतिक नेता स्वेच्छा से पद त्याग नहीं करेंगे। विशेपकर तानाशाह मुस्लिम राष्ट्रों के नायकगण की पड्यंत्र से हत्याएँ होती रहेंगी।

यांत्रिक सभ्यता का प्रभाव

डा० जूलवर्न ने कहा है कि सन १९९० तक सारी पृथ्वी के विशेषत: शहरी क्षेत्रों में ८६% वायु प्रदूषित होगी। ऐसा कल-कारखानों के कारण होगा।

हरेक व्यक्ति के लिए आवश्यक होगा कि वह अपनी श्वाँस की रक्षा के लिए आक्सीजन का सिलिण्डर पीठ पर लिए रहे। लोग अर्द्ध विक्षिप्त से होंगे, एडवेन्चर से डरेगे। छोटी-छोटी बातों पर झुँझलाकर झगड़ा करेंगे। यांत्रिक विकास से लोगो को घृणा हो जाएगी। सन १९९५ तक पूरे विश्वमें भारतीय देवी-देवताओं की पूजा होने लगेगी और इसकी संस्कृति और सभ्यता अपनाई जाएगी।

पाश्चात्य देशों के लगभग प्रत्येक घर में हिन्दू देवी ओर देवताओं के चित्र टँगें होंगे।

भारत का भविष्य

सभी त्रिकालदर्शी भारतके उज्वल भविष्य पर एकमत हैं। चीरो, हरकोस प्रोफेसर हरार सभी ने भारत के विकास की भविष्यवाणियाँ कीं। भारत के सन् १९८० से २००० तक का समय अत्यन्त श्रेष्ट है। इसकी उन्नति देखकर संसार अचम्भित होगा।

१९८५ तक भारत अपनी, चीन के हाथों खोई हुई भूमि, लड़कर पुनः

प्राप्त कर लेगा। तिब्बत की स्वतंत्रता का श्रेय भी भारत को ही मिलेगा। तिब्बत का भारत में विलय हो जायगा। भारतकी आध्यात्मिकता विश्व-व्यापी हो जायगी। भारत के पड़ोसी छोटे-छोटे राष्ट्र अपनी इच्छा से भारत में मिल जाएँगे।

भारत और पाकिस्तान

भारत और पाकिस्तान पर की गई पेशिगोई के बाबत हम अगर बुखारा के वल्ली साहब की किताब कसीदा के कुछ लब्ज पेश करें तो ज्यादा बेहतर होगा। इनकी यह किताब अब भी पटना ओरिएण्टल पुस्तकालय में देखी जा सकती है।

"इन दोनो देशों में आपसी संघर्ष होते रहेंगे। यह तब तक चलता रहेगा जब तक पाकिस्तान नश्त नबूत न हो जाय। इस आखिरी लड़ाई में पाकिस्तान हिन्दुस्तान में मिल जाएगा।

एक भारतीय मुस्लिम सेना नायक के हाथों ही पाकिस्तान शिकस्त खाएगा सन् १९८१ तक पाकिस्तान का अस्तित्व मुश्किल से रह सकेगा। सन् १९८२ तक भारत अपना अन्तरिक्ष यान भेजेगा।"

भारतवर्ष और विश्वयुद्ध

सन् १९८५ तक भारत कई नए अस्त्र-शस्त्र का निर्माण कर एक शक्ति शाली देश के रूप में उभर चुका होगा। विश्वयुद्ध का सर्वाधिक लाभ भारतको ही प्राप्त होगा। आरम्भ में यह विश्व युद्ध में चीन का साथ देगा। परन्तु सन् ९८४ के आते ही, (जनवरी में) यह अपना हाथ विश्व युद्ध से खींच लेगा और तटस्थ हो जायेगा।

भारतवर्ष की प्रतिष्ठा संसार भर में बढ़ेगी। तृतीयविश्वयुद्ध में संसार के महान शक्तिशाली राष्ट्र क्षतिग्रत हो चुके होंगे। चीन बर्बाद हो चुका होगा। अमेरिका और रूस क्षतिग्रस्त। मैंने चीन के भारत पर आक्रमण के समय एक निबन्ध प्रकाशित किया था। उसके एक वाक्य पर काशी विद्या पीठ के हिन्दी प्राध्यापक, मेरे गुरूजी ने, आपत्ति की थी। आजनेहरू जी की कौन सुनता है ? गांधीजी को विश्व में कौन समझने वाला है ? उन्होंने कहा था और वे मेरी बात मानने को तैयार न थे। लेकिन भविष्य में वस्तुतः भारत का माव बढ़ेगा।

विश्व युद्ध के पश्चात् भारतीय दर्शन एवं इसकी आध्यात्मिक विचारधारा की लहर संसार भर में फैलेगी। विश्वयुद्ध के दुष्परिणाम भौतिक एवं विज्ञान वादी विचार धारा को ध्वस्त कर देंगे और लोग कुछ हद तक (सेनर) समझदार हो चुके होंगे।

गौतम बुद्ध की भाँति एक भारतीय युग पुरुप जिसका जन्म सन् १९६० के लगभग हो चुका है संसार को शान्ति का मार्ग दिखाएगा। उसके विषय में हम त्रिकाल दर्शियों की वाणियाँ अगले पृष्ठों पर उद्धृत करेंगे। यू० एव० ओ० जैसी संस्था का निर्माण भारतवर्ष में ही होगा।

भविष्यवक्ताओं ने भाषा के विषय में भी भविष्यवाणियाँ की हैं। उनका कहना है कि संसार के सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली एक भाषा का सार्वलौकिक विस्तार होगा। मेरा ऐसा अनुमान है कि ऐसी भाषाएं अवश्य ही हिन्दी अथवा संस्कृत होनी चाहिए।

भारतीय ज्ञान विज्ञान की मर्यादा बढ़ेगी। आयुर्वेद शास्त्र एवं आध्यात्म भारतीय ज्योतिष आदि का मान बढ़ेगा।

श्रीमती गांधी सन् १९८७ तक निर्बाध सत्ता में रहेगी। १९८८ इनके लिए

अनुकूल नही है। इनके द्वारा सुधार कार्य सम्पन्न होंगे। भारत प्रगति करेगा।

इसराइल अरब और रूस

१९८० के पूर्व अरब और इसराइल में एक लड़ाई अवश्यसम्भावी है। इसराइल और इस्लाम धर्मों के बीच यह युद्ध होगा और धार्मिक भावना इसमे अपना सहयोग देगी। रूस सर्व प्रथम अरबवासियों की मदद करेगा लेकिन शनै शनै यह अपनाहाथ खींच लेगा। तब इसराइल अमेरिका की सहायता लेकर अरब वासियों पर टूट पड़ेगा और अरब को अत्यधिक नुकसान उठाना पड़ेगा।

इस युद्ध में उन्हें करारी हार मिलेगी। मुसलमानों की संख्या मिटेगी। सम्भवतः यही कारणहै कि उनकी पेशिगोई में आसारे कयामतका जिक्र मिलताहै।

भगवान, खुदा या पैगम्बर

भविष्यवक्ताओं ने महामानव के विषय में बहुत कम जानकारियाँ दी हैं और अभी तक यह ज्ञात नहीं होसका है कि वह महामानव या अवतार कौन है। इसमे संदेह नहीं कि उस दिव्यात्मा का जन्म भारत में हो चुका है और वह तृतीय महायुद्ध के बाद विश्व-विख्यात हो चुका होगा। सम्प्रति वह हिमालय के किसी एकान्त स्थल पर साधनारत हैं। वह सादा जीवन उच्च विचार को चरितार्थ करता है। प्रो०हरार के स्वप्नों में इस दिव्यात्मा के दर्शन होते रहे। उनका शब्दचित्र उल्लेखनीय है। किसी जलाशय के निकट बैठे भक्तोंके बीच इस महायोगी की भृकुटि में मुझे अर्द्ध-चन्द्र के दर्शन होते हैं। वे खड़ाऊ पहनते है। वस्त्र श्वेत धारण करते हैं। उनके बाल भी श्वेत हैं।

जूलबर्न भविश्यवक्ता के कथनानुसार वह व्यक्ति सन् १९६२ से पूर्व ही जन्म ले चुका हैं। आरे चाई ने लिखा है – जिस प्रभु की प्रतीक्षा इसराइल वाले कर रहे हैं वह धरती पर आ गया है । उनके दुखो के साथ संसार के दुखो का अंत होने वाला है।

जॉन एडन ने कहा है वह अवतार प्रकृति में आवश्यक हेर-फैर कर सकने में समर्थ है। सूर्य की प्रकाश-किरणोंके माध्यम से वह अपनी सूक्ष्मशक्ति द्वारा भावना शील व्यक्तियों को अभिप्रेरित करने में संलग्न है। उसमें अद्‌भुत संगठन बल है। उसके लाखों अनुयायी प्रचण्ड एवं विवेक पूर्ण विचारों द्वारा लोक मंगल की भावना जन मानस में उत्पन्न कर रहे हैं। उसके तर्क युक्त एवं विज्ञान-सम्मत आध्यात्मिक विचारोंके सम्मुख नास्तिक वर्गभी नत मस्तक होगा। उस दिव्य मानव को भारत केउत्तरा खण्ड में कहीं पहाड़ीतीर्थस्थल पर विश्व परिवर्तनों के कार्यो में तल्लीन होना चाहिए। जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि वह महामानव आने वाले युग में ईसाइयों का ईसा हिन्दुओं का अवतार होगा और मुसलमान उसे अपना सच्चा रहनुमा मानेंगे।

सोने का भाव

सोने का भाव निरन्तर बढ़ता रहेगा। यह सस्ता कभी नहीं होगा।

१९८२ में

भारतीय जन अन्तरिक्ष की यात्रा प्रथम बार करेंगे।

२४ जुलाई १९८४

एक प्रलयंकारी दिन की भांति अशुभ है । सम्भव है कि विश्व युद्ध एवं प्राकृतिक प्रकोप से असंख्य व्यक्ति काल कलवित हों।

२१ अप्रैल १९८५

इस वर्ष अमेरिका के अन्तरिक्ष यात्री शुक्र ग्रह पर पहुंचेगे।

मृत सागर

मृत सागर से अपार खनिज की प्राप्ति होगी।

फरवरी १९९१

तक अन्य ग्रह के मानव का इस धरती पर प्रथम वार आगमन होगा।

१९९५ में

में वृहस्पति ग्रह के मानव यहाँ पहुंचेगे। यह कोलम्लस की खोज से अधिक महत्वपूर्ण और हैरत अंगेज होगी।

सन् १९९१ में अकाल

महाकाल का समय होगा जब मानव अनाज के एक-एक दाने कें लिए तरसेंगे और जीवन रक्षा के लिए कन्द-मूल खा कर भी निर्वाह करने कें लिए मजबूर होंगे।

१९९९

बिश्व राष्ट्र संघ जैसी संस्था का भारत में निर्माण होगा। एक नए युग का सूत्र पात। राम-राज्य का आगमन। युद्ध से संसार की जनसंख्या आधी हो चुकी होगी। आध्यात्मिकता की लहर पूर्ण विश्व में फैल चुकी होगी।

आशा की एक किरण

अमेरिका की सुश्री फ्लो रेन्स नामक भविष्यवक्ता के कथन मानवता के लिए आशा की किरण के समान है। इनकी विश्वयुद्ध सम्बन्धित भविष्य वाणी सभी अन्य भविष्यवाणियों से अलग है। इनका कथन है कि विश्व में युद्ध की सी स्थिति सन्१९८०-८१तक अवश्य बन जायगी। परन्तु भारतीय राजनीतिज्ञों के प्रभाव से युद्ध नहीं होगा।

भारत में उस समय आध्यात्मिक व्यक्ति प्रभुत्व में आ चुका होगा राजनैतिक क्षेत्र मे ऐसे लोगों के आगमन से भारत का मान बढ़ेगा और संसार में शान्ति स्थापित होगी।

विज्ञान—भविष्य में

बर्टेण्ड रसेल की इम्पैक्ट ऑफ साइंस आन सोसाइटी जैसी पुस्तकें एवं कैट एण्ड वीनर की दि इयर २००० जैसी कृत्तियाँ भविष्य की वैज्ञानिक उपलब्धियों पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं।

आधुनिक विचारकों ने माल्थस की जनसंख्या सम्बन्धीं विचारों को गलत बताया है। लेकिन प्राकृतिक प्रकोप, युद्ध एवं आज की बढ़ती जा रही जन संख्या माल्थस के विचारोंके पुनः मूल्याकंन के लिए हमें विवश कर रही हैं।

२०००-२१०० तक युग परिवर्तन दिखाई पड़ेगा। भारतीय महामानव की अमृत वाणी से संसार को एक नवीन जीवन-दर्शन प्राप्त होगा। युद्ध की विभीषिका को देख भावी मानव को भौतिक शक्तियों से घृणा हो चुकी होगी। तब विज्ञान के हम सेवक नहीं बनेगे विज्ञान मानव के हित में प्रयुक्त होगा।

समुद्र में बस्तियाँ बसाई जा सकतीं हैं। अन्य ग्रहों का आवागमन सुलभ और सस्ता हो सकता है। ज्वार - भाटों से बिजली की शक्ति प्राप्य होगी। समुन्द्र से आहार एवं अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएं प्राप्त की जा सकेगी। विज्ञान अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को स्वीकार करेगा।

संसार में इस तृतीय विश्वयुद्ध के बाद फिर युद्ध नहीं होंगे। मानव जीवन की इस धरती की कुछ ऐसी ही मोड़ ले रही है। जिसका चरमों त्कर्ष युद्ध होगा। तब एक युग की नई कथा बनेगी जिसमे युद्ध संहार एवं मानव निर्मित विभीषिकाएँ प्राथमिकता नहीं पाएंगी। हो सकता है कोई गाँधीवादी इस युग को ही रामराज्य का पुनरागमन कहे कोई हिन्दू सत्-युग। अंग्रेजी पढ़ा लिखा व्यक्ति कहे यूटोपियन। धरती का एक सामान्य इन्सान संसार का मंगल चाहता है। कोशिशें इसी की होती हैं कि अमन चैन हो। सुख-शान्ति रहे।

नियति या तों दैवी रूप में या हमारी दुर्बुद्धि के दुष्कृत्य स्वरूप अपना खेल खेलती रहती हैं। उत्थान या पतन जो कुछ भी बदा है वह होकर ही रहता है।

काश यह मानवता का भावी इतिहास ८८० बोल्ट्स के खतरे का स्पर्श न करता काश हमारे वायु मण्डल में जहरीली गैसें न भरी जाती। काश पेकिंग के स्कूलो में पढ़ते दुधमुहे बच्चोंपर बमवर्षा न होती। काश न्यूयार्क, मास्कोकी निरापराध महिलाएँ अपने घरों में जीवन निर्वाह कर पातीं।

काश विज्ञान का सदुपयोग तृतीय विश्व युद्ध के पूर्व ही हम सीख जाते और विश्व युद्ध न होता।

काश इस पुस्तक की सम्भाव्य विश्व युद्ध सम्बन्धी भविष्यवाणियां असत्य सिद्ध होती और फ्लोरेन्स की भविष्यवाणी ही सत्याकाश....—

● ● ●

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
१—	प्राकृतिक प्रकोप	३
२—	तृतीय विश्वयुद्ध	५
३—	पतनोन्मुख जीवन	७
४—	भारत का भविष्य	८
५—	भारत और पाकिस्तान	६
६—	भारत और विश्वयुद्ध	६
७—	इसराइल, अरब और रूस	११
८—	भगवान्, खुदा, पैगम्बर	११
९—	अन्य भविष्यवाणियाँ	१२

आस्था की आधार-शिला :-

पेशिंगोइयों के सबूत।

बुखारा के वल्ली साहब ने सैकड़ों साल पहले जितनी भी पेशिंगोइयाँ (भविष्यवाणियाँ) हिन्दुस्तान की आजादी, बटवारे, पाकिस्तान व पूरे आलम के मुत्तालिक कीं, वे सभी हकीकत साबित हुईं। ९९ प्रतिशत सच!

इसी तरह पीटर हर कौस और श्रीमती जीन डिक्सन की तीसरी आँखों थीं। जिस-जिस विजन का इन्होंने दीदार किया वह मंजूरे खुदा हुआ।

इस किताब में देखिए कब और कैसे कल इन्सान ८८० वोल्ट्स का खतरा छूता है। इन्सान का भावी इतिहास किस तरह बदलता है।

अगर किसी की अंधी आँखें आफताब को कबूल न करें तो हम सूरज को बुझा हुआ नहीं समझते। इसी तरह भविष्य-वाणियाँ जानकारी के बगैर नकारी नहीं जातीं।